अलंकार

PAGE NO.:
DATE: / /200

शब्द और अर्थ की शोभा बढ़ाने वाले धर्म को अलंकार कहते हैं। अलंकार का प्रचलित अर्थ है - आभूषण या गहना। जिस प्रकार आभूषणों से शरीर की शोभा बढ़ती है, उसी प्रकार जिन तत्त्वों से काव्य में सुन्दरता आती है उन्हें अलंकार कहते हैं।

अलंकारवादियों के दो वर्ग हैं- पहले वर्ग में वे अलंकारशास्त्री आते हैं जो अलंकार को ही काव्य का सर्वस्व मानते हैं और रस, ध्वनि आदि को अलंकार के अंतर्गत ही मानते हैं। दूसरे वर्ग में वे अलंकार-शास्त्री आते हैं जो रस, ध्वनि आदि की स्वतंत्र सत्ता मानते हुए अलंकार की पृथक सत्ता मानते हैं। इसके अतिरिक्त एक तीसरा वर्ग भी है जो अलंकारों का महत्त्व साधन रूप में स्वीकार करता है और रस तथा ध्वनि को प्रमुखता देता है। इस वर्ग को रसवादी कहा गया है।

अलंकारवादी आचार्य जहाँ काव्य की शोभा का मूल कारक अलंकार को ही मानते हैं और उससे विहीन काव्य की कल्पना भी नहीं कर सकते, वहाँ रसवादी आचार्य मानते हैं कि अलंकार के बिना भी कविता उत्कृष्ट कोटि की हो सकती है। वे तो मात्र रस आदि के सहायक तत्त्व हैं, ठीक वैसे ही जैसे हार आदि आभूषण शरीर की शोभा को बढ़ाने वाले होते हैं, जन्म देने वाले नहीं।

अलंकारों का विकास धीरे-

Teacher's Signature

PAGE NO.:
DATE: / 1200

☆ "सत्यर्थे पृथगर्थाया : स्वरव्यंजनसंहते : ।
क्रमेण तेनैवावृत्तिः यमकं विनिगद्यते ।"
(भिन्नार्थ अथवा निरर्थक स्वर - व्यंजन समुदाय की आवृत्ति को यमक कहते हैं ।)

धीरे हुआ है। भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' में चार अलंकारों का उल्लेख मिलता है। कहीं अलंकार की स्थिति शब्द के ऊपर निर्भर करती है वहाँ शब्दालंकार होता है। जहाँ शब्द की कोई प्रधानता नहीं, अलंकार केवल अर्थाश्रित हो अर्थात् शब्द - परिवर्त्तन कर देने पर भी जहाँ अर्थ अपरिवर्त्तित रहे वहाँ अर्थालंकार होता है। कहीं अलंकार की स्थिति शब्द और अर्थ दोनों पर अवलंबित रहती है, वहाँ किसी एक का भी परिवर्त्तन होने से अलंकार नष्ट हो जाता है। अतः उसे शब्दार्थालंकार या उभयालंकार कहते हैं।

☆ Imp * यमक अलंकार (शब्दालंकार) :→ (06), (04), (02)

'यमक' शब्द का अर्थ है दो। जहाँ एक शब्द की आवृत्ति एकाधिक बार हो और भिन्न - भिन्न स्थान पर उसका अर्थ भिन्न - भिन्न हो वहाँ यमक अलंकार होता है।

उदाहरण :→

कनक - कनक ते सौगुनी

(i) "कमलासन पर बैठे कमलासन
लगे तपस्या करने ।"

(ii) "ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहन बारी, (महल)
ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहाती है। - (भूषण) (गुफा)

(iii) "केकी - रव की नूपुर ध्वनि सुन
जगती जगती की मूक प्यास ।" - (महादेवी)

Teacher's Signature

PAGE NO.:
DATE: / /200

(iv) "किसी सोच में हो विभोर साँसे कुछ ठंडी खींची।
फिर झट गुल कर दिया दिया को दोनों आँखें मींची।"
— ('नूरजहाँ' महाकाव्य)

Imp

* **श्लेष अलंकार :→** (07), (05), (03), (01)

"श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते।"

'श्लेष' शब्द 'श्लिष' धातु से बना हुआ है जिसका शाब्दिक अर्थ है – चिपका हुआ। इसका अर्थ यह हुआ कि ऐसा शब्द, जिसमें अनेक अर्थ मिले हुए या चिपके हुए हों। जहाँ किसी शब्द के एक बार प्रयुक्त होने पर भी एक से अधिक अर्थ हों वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण :–

(i) "रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गये न उबरै मोती, मानुष, चून॥"

यहाँ 'पानी' शब्द के तीन अर्थ निकलते हैं – चमक, प्रतिष्ठा और जल।

श्लेष के दो भेद हैं – अभंग और सभंग।

(क) अभंग श्लेष :→

अभंग उसे कहते हैं जिसमें बिना भंग के अनेक अर्थ हो जाएँ। जैसे – हरि, सूर आदि शब्द अभंग श्लेष के उदाहरण हैं।

(ख) सभंग श्लेष :→

सभंग में शब्दों को तोड़-मरोड़कर अनेक अर्थ प्राप्त किए जाते हैं। जैसे –

Teacher's Signature

PAGE NO.:
DATE: / /200

राम और कृष्ण दोनों के लिए प्रयुक्त यह विशेषण -
(i) 'पूतनामारण में अतिधीर' [पूतना मारण में अतिधीर → कृष्ण, पूतनामा (पवित्र नाम वाले) रण में अतिधीर → राम]

(ii) 'हे भूप ! कुबेर, सुरेश सी सबों ने देखी वसुधा रण चातुरी तुम्हारी ।' (वसु धारण, वसुधा रण)

Imp ✓ * उपमा अलंकार (अर्थालंकार) :→ (07), (05), (03), (0

" साधर्म्यमुपमा भेदे।" (भिन्न पदार्थों के सादृश्य प्रतिपादन को उपमा कहते हैं।) जहाँ दो विभिन्न वस्तुओं में रूप, गुण, आकृति आदि को लेकर सादृश्य या साधर्म्य की स्थापना की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है। जैसे -
" उधर गरजती सिन्धु लहरियाँ (सिन्धु लहरियों
कुटिल काल के जालों सी। की तुलना व्याल
चलती आ रही फेन उगलती से की गई है।)
फन फैलाये व्यालों सी ॥"

उपमा का अर्थ है - समीप से तौलना अर्थात् एक वस्तु के समीप दूसरी वस्तु को रखकर उनकी समानता प्रतिपादित करना। उपमा के चार अंग होते हैं—
(i) उपमेय :→ जिस वस्तु की समता की जाए। उपमेय को वर्णीय प्रस्तुत विषय भी कहते हैं जिसकी किसी दूसरी वस्तु से तुलना की जाती

(ii) उपमान :→ अप्रस्तुत वह वस्तु जिससे किसी दूस

वस्तु की तुलना की जाती है।

(iii) धर्म :→ वह गुण जिसके कारण उपमेय तथा उपमान में साम्य स्थापित हो।

(iv) वाचक :→ वाचक वह पद या शब्द है जिसके द्वारा उपमेय तथा उपमान का साम्य प्रतिपादित किया गया हो। जैसे – " मुख चाँद-सा सुन्दर है।" इस उदाहरण में 'मुख' उपमेय है क्योंकि इसकी तुलना की जा रही है। 'चाँद' उपमान है क्योंकि इससे मुख की तुलना की जा रही है। 'सुन्दर' विशेषण पद समान गुण रूप धर्म है। 'सा' वाचक पद है जिसके द्वारा समानता स्थापित की गई है।

उपमा के प्रमुख भेद :→

(i) पूर्णोपमा :→

पूर्णोपमा अलंकार में उपमान, उपमेय, सामान्य धर्म और वाचक शब्द नामक चारों तत्त्व वर्त्तमान रहते हैं। उदाहरण :-

" मोम - सा तन घुल चुका है,
अब दीप - सा मन जल चुका है।"

(ii) लुप्तोपमा :→

जहाँ उपमेय, उपमान, साधर्म्य या वाचक में से किसी एक, दो य